ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 12, Dec 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

चिकित्सा विधाएं में सुश्रुत का योगदान

श्री पूरण मल मीना

सह आचार्य इतिहास

राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लालसोट (दौसा)

शोध सारांश :– आयुर्वेद की दो परम्पराओं में, वेद परम्परा में रुद्र (शिव) को प्रथम भिषक् तथा आयुर्वेदिक संहिताओं की परम्परा में ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम उपदेष्टा माना गया है। आयुर्वेद का सम्बन्ध मुख्यतः अथर्ववेद से ही है तथा आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपाङ्ग माना गया है। काश्यप–संहिता में वेदों के साथ आयुर्वेद को भी पाँचवा वेद माना गया है। वैदिक साहित्य में दो प्रकार के भिषक् का उल्लेख आया हैः– 1. दैवभिषक् और 2. मानुषभिषक्। दैवभिषक् अग्नि, रुद्र, वरुण, इन्द्र, अश्विनौ, मरुत एवं सरस्वती को माना गया है, जिनमें सरस्वती स्त्रीवाची है। परमात्मा को देवों में सबसे बड़ा वैद्य बताया गया है। आयुर्वेद के मन्त्रों का वर्णन सभी वेदों में यत्र–तत्र अवश्य आया है। सर्वानुक्रमणिका नामक ग्रन्थ में वेद मन्त्रों में आए आयुर्वेदिक मन्त्रों के दृष्टा ऋषियों का नामोल्लेख प्राप्त होता है, जिनमें अथर्वा, अत्रि, अथर्वाङ्गिरा, अंगिरा, बृहस्पति, विश्वामित्र, मनु, गौतम, शौनक, सविता आदि 76 की गणना की गई है। लौकिक परम्परा के आचायों मे सुश्रुत का नाम प्रमुख है।

संकेताक्षर :—उपायहृदय, धन्वन्तरि, विश्वामित्र, भिक्षु संघाटी, सूत्रस्थान, कल्पस्थान, कौमारभृत्य, अस्थिभंग, विष भोज, शिष्योपनयनीय, शारीरस्थान, निदानस्थान, रोपण तंत्र

प्रस्तावना :— सुश्रुत दो कहे जाते हैं एक वृद्ध सुश्रुत (आद्यसुश्रुत) और दूसरे सुश्रुत। दिवोदास के शिष्यों में आद्य या वृद्ध सुश्रुत की सर्वप्रथम गणना है जिन्होंने मूल सौश्रुत–तन्त्र की रचना की थी। यह सम्भवतः अग्निवेशतन्त्र से पूर्व की रचना थी। उसके बाद सुश्रुत द्वितीय या सुश्रुत ने उसका प्रतिसंस्कार कर नवीन रूप प्रदान किया। आद्य या वृद्धसुश्रुत का काल उपनिषत्काल ही है, जो काशिराज दिवोदास का ही काल 1000—1500 ई. पूर्व के मध्य में माना गया है किन्तु सुश्रुत का कालनिर्णय अभी विचारणीय है। अन्य तथ्यों के आधार पर सुश्रुत का काल दूसरी शती माना जा सकता है। दिवोदास धन्वन्तरि के उपदेशों को सुश्रुत ने अपनी संहिता में निबद्ध किया है, जो शल्यतंत्र का आद्यग्रंथ बना। विभिन्न ग्रन्थों के अध्ययन के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि सुश्रुत भी दो हुए हों, जिसको हम वृद्ध सुश्रुत तथा सुश्रुत कहते हैं। दिवोदास धन्वन्तरि वृद्ध या आद्य सुश्रुत के गुरू थे, जिन्होंने मूल सुश्रुत तंत्र का सम्पादन किया। यह अग्निवेश के पूर्व की रचना है। द्वितीय सुश्रुत ने इसका प्रतिसंस्कार किया, दूसरा प्रतिसंस्करण दृढ़बल के बाद हुआ, जो नागार्जुन के द्वारा माना जाता है। सुश्रुत संहिता में लिखा है कि सुश्रुत का संहिता निर्माता विश्वामित्र का पुत्र सुश्रुत है।[i] चन्द्रदत्त ने भी टीका में ऐसा ही लिखा है विश्वामित्र द्वारा अपने पुत्र सुश्रुत को काशीराज धन्वन्तरि के पास अध्ययन के लिये भेजने का जो उल्लेख

भाव प्रकाश में है वह इसी उपलब्ध सुश्रुत के आधार पर है। अग्नि पुराण में नर[ii], अश्व और गायों से सम्बन्धित आयुर्वेद का ज्ञान भी सुश्रुत और धन्वन्तरि के बीच शिष्य रूप गुरू में वर्णित है। सुश्रुतसंहिता के उपदेष्टा धन्वन्तरि हैं जिन्होंने सुश्रुतप्रभृति शिष्यों को शल्य ज्ञानमूलक उपदेश दिया। सुश्रुतसंहिता में 'धन्वन्तरि' के साथ 'काशिराज दिवोदास' शब्द प्रयुक्त होने से यह सन्देह किया जाता है कि धन्वन्तरि उपदेष्टा हैं या दिवोदास। कुछ विद्वान् धन्वन्तरि को उपदेष्टा मानते हैं और कुछ काशिराज दिवोदास को।

सुश्रुतसंहिता के विषय विभाग

सुश्रुत संहिता के दो भाग वर्तमान में उपलब्ध है। सुश्रुत संहिता प्रथम भाग व द्वितीय भाग में विभक्त है। प्रथम भाग में पाँच स्थान हैं। मूल संहिता की विषयवस्तु का विभाजन इस प्रकार है :–

1. सूत्रस्थान – 46 अध्याय
2. निदानस्थान – 16 अध्याय
3. शारीरस्थान – 10 अध्याय
4. चिकित्सालय – 40 अध्याय
5. कल्पस्थान – 8 अध्याय

कुल 120 अध्याय

इस प्रकार कुल 120 अध्याय हैं[iii]। सुश्रुत संहिता के द्वितीय भाग में सिर्फ उत्तर तंत्र का

वर्णन मिलता है। उत्तर तंत्र को खील स्थान के नाम से भी जाना जाता है। इस तरह सुश्रुत संहिता के दोनो भागों में छह स्थान, 186 अध्याय हैं। प्राचीन संहिताओं की व्यवस्था प्रायः इसी प्रकार थी। चरकसंहिता में भी इतने ही अध्याय हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि उत्तरतन्त्र बाद में जोड़ा गया। उत्तरतन्त्र में इनके अतिरिक्त 66 अध्याय हैं। सुश्रुत संहिता आयुर्वेद के प्राचीन और लोकप्रिय ग्रन्थों में से एक थी और जो विशेष रूप से शल्य (सर्जरी) के बारे में जानकारी देता है। वास्तविक सुश्रुत संहिता आचार्य सुश्रुत के द्वारा लिखी गई जिसे बाद में नागार्जुन ने संपादित किया।

विषयवस्तु की दृष्टि से, सूत्रस्थान में मौलिक सिद्धान्त, शल्यकर्मोपयोगी साधन यंत्र–शस्त्र, क्षार–अग्नि–जलौका आदि, अरिष्टविज्ञान तथा द्रव्यगुणविज्ञान वर्णित हैं। निदानस्थान में प्रमुख रोगों का निदान है। शारीरस्थान में शारीरशास्त्र का वर्णन है। चिकित्सास्थान में मुख्यतः शल्यचिकित्सा, वाजीकरण, रसायन और पंचकर्म का वर्णन है। कल्पस्थान में विषों का प्रकरण है। उत्तरतन्त्र में शालाक्य, कौमारभृत्य, कायचिकित्सा तथा भूतविद्या का वर्णन है। इससे स्पष्ट होता है कि मूल संहिता शल्य प्रधान थी जिसमें बाद में अन्य अंगों का समावेश कर अष्टांगपर्ण बना दिया गया[iv]। ऐसा लगता है कि प्रारम्भ में अष्टांगविभाग की जो व्यासशैली प्रचलित हुई उससे विभिन्न विशिष्ट अंगों पर ग्रन्थ लिखे जाने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि चिकित्सकों का ज्ञान एकांगी होने लगा और वे सब प्रकार के रोगों के निवारण में असमर्थ होने लगे। गुप्तकाल में जब जनसेवा के लिए अनेक आतुरालयों की स्थापना होने लगी तो इस त्रुटि की ओर लोगों का ध्यान गया और पुनः समासशैली पर

संहिताओं का प्रतिसंस्कार हुआ। सुश्रुतसंहिता में शल्यतन्त्र के अतिरिक्त अन्य अंगों का समावेश हुआ और चरकसंहिता में दृढ़बल ने शल्यशालाक्य आदि विषयों की स्थापना की। इसी शैली पर वाग्भट ने पुनः युगानुरूप अपने ग्रन्थों की रचना की। यह युगधर्म का प्रभाव था।

उत्तर तंत्र नामक छठा भाग बाद में नागार्जुन द्वारा सुश्रुत संहिता में जोड़ा गया था जिसके अध्याय की संख्या 66 है। सूत्रस्थान में 46 अध्याय हैं। इसमें आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को सम्मिलित किया गया है साथ ही शल्य चिकित्सा के लिए प्रारंभिक तैयारी, विभिन्न प्रकार की शल्य चिकित्सा, त्रिदोष महत्व, औषधीयकरण, जड़ी बूटियों के संग्रह और संरक्षण तथा विभिन्न प्रकार के तरल और ठोस खाद्य पदार्थों पर चर्चा है। निदान स्थान में 16 अध्याय हैं, इसमें रोगों के लक्षणों के संकेत, विभिन्न बीमारियों जैसे भगंदर, ट्यमूर, अस्थिभंग आदि की चर्चाएं हैं।

शरीर स्थान में 10 अध्याय हैं। यह भ्रूण विज्ञान और शरीर रचना पर बल देती है। सुश्रुत ने मूत्र पथ के सभी रोगों में सबसे गंभीर मधुमेह रोग को कहा है। चिकित्सा स्थान में कुल 40 अध्याय हैं। यह विभिन्न बीमारियों का वर्णन करती है। रोग निरोधी दवाएं, पंचकर्म विधि, शल्य क्रियाओं को एक व्यवस्थित ढंग से समझाया गया है जिसमें पूर्व शल्य क्रिया, शल्य क्रिया और पश्च शल्यक्रिया है।

सुश्रुत द्वारा यहां पूर्व में घोषित था कि जो सिद्धांत रूप को अच्छी तरह से जानता हो उन्हें ही व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए। उच्छेदन का अभ्यास फलों और सब्जियों पर हो जैसे

अल्बू।

मूत्राशय और मृत पशुओं या वाटर लिली के डंठल पर सिरोववेधन किया जाए। बिल्व के गूदे पर दांत उखाड़ने का अभ्यास करना। पतले कपड़े या चमड़े पर टांके लगाने का अभ्यास करना। मिट्टी के पूर्ण आकार की मानव आकृतियों पर बंधन करना चाहिए। मृत शरीर के संरक्षण पर भी व्याख्यान हैं। विशेष शल्य विधियों जैसे दागना, रक्तदान शिविर, वेधन आदि के बारे में बताया गया है। सुश्रुत ने विभिन्न प्रकार की त्वचा का प्रत्यारोपण अर्थात प्लास्टिक सर्जरी प्रकृति के अनुसार बताई है।

अस्थिभंग (Fracture) और विस्थापन (Dislocation) की उपचार विधि बताई

है। बवासीर तथा नासूर की शल्य ऑपरेशन के बारे में वक्तव्य है। मोतियाबिंद और अन्य नेत्र परिस्थितियों के लिए शल्य का ज्ञान है। उपचार और पंचकर्म तकनीक के सिद्धांतों से यह संबंधित है।कल्पस्थान में आठ अध्याय हैं। यह विष तथा विषानाशकों के बारे में है। जो सब्जियों, खनिजों एवं पशुओं के विषतंत्र पर आधारित है। इस अध्याय की शुरूआत संभावित भोज विषों (Food poisons) से और उसको दूर करने के उपाय पर होती है। अध्याय के अंत में कीटों के काटने पर चर्चा है।उत्तर तंत्र में 66 अध्याय हैं। यह अन्य विषयों को भी शामिल करता है जो पहले के विभाजनों में नहीं थे। इस तत्रं के शुरुआत में सूक्ष्म शल्य पर बात की गई अंत में सामान्य प्रकृति, षड्रस, स्वच्छता और चिकित्सा शब्दावली पर चर्चा की गई है। सुश्रुत संहिता में भ्रूण की संकल्पना के बारे में यह कहा

गया है कि निषेचन शुक्राणु और अंडाणु के संयोग से होता है। परंतु यह जीवन निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है। उसके लिए उत्कृष्ट कारक का होना अनिवार्य है। सुश्रुत नींद के विभिन्न पक्ष और स्वप्न को भी व्याख्यायित करते हैं। सुश्रुत ने समझाया कि भ्रूण गर्भावस्था के 2 महीने में एक पहचाने योग्य आकार लेता है। गोलाकार आकार पुरुष को इंगित करता है और लंबा आकार महिला अर्थात लड़की के रूप को दर्शाता है और एक ट्यूमर जैसी आकृति उभयलिंगी के जन्म को इंगित करती है।[v] रक्त परिसंचरण की समस्त प्रक्रिया को विस्तार से संहिता में समझाया गया है। मूत्र के निर्माण एवं मूत्राशय के कार्य को स्पष्ट ढंग से बताया है। रोग, रोगों की उत्पत्ति, निदान के बारे में भी बताया गया है। चरक एवं सुश्रुत ने रोगों की संख्या, उनके लक्षण, रोकथाम तथा वर्गीकरण का भी वर्णन किया है। दातों के निकालने का भी वर्णन संहिता में वर्णित है। चिकित्सकों, शल्य चिकित्सकों, नर्सों के प्रशिक्षण और कर्तव्यों के बारे में सविस्तार वर्णन सुश्रुत संहिता में है।

सुश्रुत व सुश्रुत संहिता में वर्णित विषय

आचार्य सुश्रुत प्राचीनकाल के एक उच्चकोटि के आयुर्वेदाचार्य एवं शल्य तंत्र के प्रकांड शल्य चिकित्सक थे। आचार्य सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के पुत्र थे। इन्होने आयुर्वेद शास्त्र के शल्य विभाग को अपना क्षेत्र चुना और आचार्य धनवन्तरि जी से शल्यशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। आचार्य सुश्रुत शल्य शास्त्र के विशेषज्ञ थे। उन्होंने शल्य शास्त्र दिवोदास धन्वन्तरी से प्राप्त की थी। दिवोदास को धन्वन्तरी इसलिए कहा क्योंकि वे सर्वप्रथम व्यक्ति थे जो शल्य शास्त्र को पृथ्वी पर लाए। बाद में आचार्य सुश्रुत ने गुरू उपदेश को तंत्र रूप में लिपिबद्ध

किया एवं वृहद ग्रन्थ की रचना कि जो सुश्रुत संहिता के नाम से वर्तमान जगत में रवि की तरह प्रकाशमान है।

सुश्रुत दो कहे जाते हैं एक वृद्धसुश्रुत और दूसरा सुश्रुत। कहीं–कहीं सुश्रत और वृद्धसुश्रुत दोनों के उद्धरण एकत्र दृष्टिगोचर होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दिवोदास का शिष्य आद्य या वृद्ध सुश्रुत था जिसने मूल सौश्रुत तन्त्र की रचना की। यह सम्भवतः अग्निवेशतंत्र से पूर्व की रचना थी। उसके बाद सुश्रुत द्वितीय या सुश्रुत ने उसे प्रतिसंस्कृत कर नवीन रूप दिया। एक और प्रतिसंस्कार दृढबल के बाद हुआ जो नागार्जुनकृत माना जा सकता है। इसमें चरकसंहिता (दृढबलपूरित अंशसहित) के अनेक मतों को पूर्वपक्ष के रूप में रखकर उनका खण्डन किया है। अन्तिम पाठशुद्धि चन्द्रट द्वारा दसवीं शती में हुई। अतः वर्तमान सुश्रुतसंहिता दसवीं शती के बाद की है।

सुश्रुत विश्वामित्र के पुत्र कहे गये हैं।[vi] विश्वामित्र नामक अनेक आचार्य हुये हैं उनमें एक का सम्बन्ध आयुर्वेद से है। इनके उद्धरण यत्र–तत्र मिलते हैं। बहुत संभव है कि इसी विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत हों। शालिहोत्र के पुत्र के रूप में भी सुश्रुत का उल्लेख मिलता है – सुश्रुतसंगताः शालिहोत्रीय। सुश्रुत का गवायुर्वेद, अश्वायुर्वेद से भी सम्बन्ध बतलाया गया है।[vii] संभवतः इसी कारण प्रख्यात सश्रुत के नाम को शालिहोत्र से संबद्ध कर दिया। या यह भी हो सकता है कि अश्वशास्त्रवित् शालिहोत्रपुत्र कोई भिन्न सुश्रुत हों जिन्होंने वाजिशास्त्र पर कोई ग्रन्थ लिखा हो जिसका निर्देश दुर्लभगणकृत सिद्धोपदेशसंग्रह नामक

अश्ववैद्यक के ग्रन्थ में हुआ है।

सुश्रुत संहिता की विशेषता –

सुश्रुत संहिता बृहदत्रयी का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह संहिता आयुर्वेद साहित्य में शल्यतंत्र का वृहद साहित्य मानी जाती है, सुश्रुत संहिता के उपदेशक काशिराज धन्वन्तरि है, एवं श्रोता रूप में उनके शिष्य आचार्य सुश्रुत ने संपूर्ण संहिता की रचना की है। आचार्य सुश्रुत ने शल्य शास्त्र से संबंधित सभी विषयों को कुसुमवत इस संहिता में पिरोकर प्रस्तुत किया। आचार्य सुश्रुत का समय ईसा की तीसरी शताब्दी मानी गया है।

1. **सूत्र स्थान** – सूत्र स्थान में 46 अध्याय हैं। सूत्र स्थान में योगसूत्रीय अध्याय से संपूर्ण स्थान में अस्त्र–शस्त्र, यंत्र–उपयंत्र संबंधित संपूर्ण जानकारी वर्णित है। आचार्य सुश्रुत ने अपने इस स्थान में सौ से अधिक शल्य शस्त्रों का वर्णन किया है जैसे–

1. शस्त्रों के मूठ एवं जोड़ मजबूत होने चाहिए।

2. वे चमकीले और तीक्ष्ण होने चाहिए।

3. शस्त्रों को साफ उबालकर कोमल वस्त्रों में लपेटकर सन्दूक या बॉक्स में बन्द करके रखना चाहिए।

4. अस्थि टूट जाने पर जोड़ने के लिए बांस की पट्टियों का प्रयोग करना चाहिए। अस्थियों को ठीक बिठाने के लिए बाहर से मालिश का विधान बताया है।

5. व्रणों के अनेक प्रकार एवं अलग–अलग उपचार पद्धति का वर्णन।

6. सिर एवं चेहरे पर कट, फट जाने से बंध (टाका) लगाने का वर्णन।

7. जख्मों में लोहकण या लोहखण्ड घुस जाने से चुम्बक के प्रयोग से बाहर निकालना।

8. सूजन वाले जगह पर लेप का प्रयोग।

8.कच्चे व्रणों को पकाने के लिए पुल्टिस बाँधना, सिकाई करना, खून निकालने या चीरा लगाने का विधान है।

10.जलोदर (पेट में पानी जमा होना) और वृषण वृद्धि (अण्डकोष में पानी भरना) में छेदन कर जल निकालने का विधान।

11. मूत्राशय में बनने वाले पथरी रोग में शल्य क्रिया का वर्णन है। इसी तरह पंचकर्म में रक्त मोक्षण (रोग के स्थान को लोह गरम करके दागना या ऑकना), त्रिदोष सिद्धान्त का सरल वर्णन है।

2. निदानस्थान – इस स्थान में सोलह अध्याय हैं। जिसमें शल्य प्रधान (आपरेशन से ठीक होने वाले) रोगों का जैसे अर्श (बवासीर), भगन्दर (गुदा के पास होने वाला घाव), अश्मरी (मूत्राशय, एवं पित्ताशय की पथरी), मुढ़गर्भ (माँ के गर्भ में ही बच्चे की मृत्यु), गुल्म (ट्यूमर) आदि रोगों का निदान लक्षण एवं सम्पूर्ण चिकित्सा का वर्णन है।

3. **शरीर स्थान** – इस स्थान में दस अध्याय हैं। जिसमें शरीर की परिभाषा, सम्पूर्ण गर्भ का वर्णन, पुरुष या सृष्टि का उत्पतिक्रम का विस्तृत वर्णन है। इसमें शरीर के अंग–प्रत्यंग एवं सभी अवयव जैसे – अस्थि संख्या, मांसपेशी, स्नायु, कण्डरा, शिरा, धमनी, हृदय, फेफड़े आदि अंगों का वर्णन है।

3. **चिकित्सा स्थान** – इसमें चालीस अध्याय हैं। जिसमें समस्त शरीर गत रोगों की शल्य

चिकित्सा एवं औषधि चिकित्सा का वर्णन है। सुश्रुत संहिता शल्य एवं शालाक्य तंत्र का प्रधान ग्रन्थ है। वर्तमान शल्य चिकित्सा शास्त्र इन्ही के आधार पर टिकी है।

4. **कल्प स्थान** – कल्प स्थान में आठ अध्याय हैं। इस सम्पूर्ण भाग में स्थावर एवं जांगम विषों के लक्षण, उनकी पहचान, विषों का औषधि प्रयोग एवं विषों से बाधित व्यक्ति का चिकित्सा कर्म का विस्तृत वर्णन है।

5. **उत्तर स्थान** – उत्तर स्थान में छियासठ अध्याय हैं। जिसमें नेत्र रोग, शिरोरोग, कर्ण रोग आदि उर्ध्व शरीर (शिर में सभी भाग) गत रोगों की शल्य एवं औषधि चिकित्सा का वर्णन है।

सारांश :– इस सम्पूर्ण ग्रंथ में रोगों की शल्य एवं शालाक्य चिकित्सा ही मुख्य उद्देश्य है। शल्यशास्त्र को आचार्य धन्वंतरी पृथ्वी पर लाने वाले पहले व्यक्ति थे बाद में आचार्य सुश्रुत गुरू उपदेश को तंत्र रूप में लिपिबद्ध किया, एवं वृहद ग्रन्थ लिखा, जो सुश्रुत संहिता के नाम से वर्तमान जगत् में रवि की तरह प्रकाशमान है। आचार्य सुश्रुत त्वचा रोपण तन्त्र (Plastic-Surgecly) में भी पारंगत थे। वे आंखों के मोतियाबिन्द निकालने की सरल कला के विशेषज्ञ थे। सुश्रुत संहिता शल्य तंत्र का आदि ग्रंथ है, आजकल शल्य विभाग (Surgical Department) में जिन यन्त्रों का प्रयोग होता है, उसका उल्लेख प्राचीन सुश्रुत संहिता में उपलब्ध है।

आचार्य सुश्रुत के द्वारा रचित यह संहिता लोक कल्याण के लिए प्राचीन भारतीय आयुर्वेद एवं शल्य चिकित्सा शास्त्र तथा विश्व को महान पुरस्कार रूप में प्राप्त है।

सन्दर्भ :–

राम उत्तरचरितमानस,

हरिवंश पुराण एवं *भागवत पुराण* में उद्धृत

वाराणसी में गोविन्दचन्द विजय के राज्य में संवत् 1201 में लिखी हुई *हरिवंश* की एक *प्राचीन ताड़पत्र* पुस्तक प्राप्त हुयी है। उसके अनुसार भी यहीं क्रम मिलता है।

महाभारत, उद्योगपर्व, 117/107, अनुशासन पर्व, 30/16/20, 30, 36–37, दान धर्म प्रकरण, 5/29, राजधर्म प्रकरण,

अग्निपुराण, 5/278; *गरूड पुराण,*

महाभारत, अध्याय 8; *गरुड़ पुराण,*

सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान

सुश्रुत संहिता, उत्तर अध्ययनसूत्र,

वही, उत्तरस्थान,

सुश्रुत संहिता में उल्लेखित श्लोक *यथा सुवैद्यको 'भेषज्य' कुशलो मैत्रचित्तेन शिक्षक*

सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान,

सुश्रुत संहिता, शारीरस्थान,

सुश्रुत संहिता, शारीरस्थान,

श्वेताश्वर,

महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय 4; *गरूड़पुराण,*

अग्निपुराण,

चरक संहिता, सूत्रस्थान,

सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान